29-04-2021

पाठ्य सामग्री

स्नातक प्रतिष्ठा, खण्ड-प्रथम, विषय-मैथिली पत्र-प्रथम
प्राध्यापक - प्रवीण कुमार 'प्रभंजन' (स०प्रा०) मैथिली विभाग
उदयनाचार्य रोसड़ा कॉलेज, रोसड़ा (समस्तीपुर)

पाठ्य पोथी - 'कृष्णजन्म' (महाकाव्य) पाठ्यांश - सप्रसंग व्याख्या
व्याख्यांश - "तखनक सबद सुनि दौड़ल नन्द
तोजि देल गाय परओ बरु बन्द
की तरु खसल बसात न झाँट
आज होइत मोर बारह बाट
जसोमति कोर हरि हृदय लगाओल
हरि दामोदर पदवी पाओल।"

प्रस्तुत पद्यांश कविवर मनबोध विरचित कृष्णजन्म महाकाव्यक तृतीय अध्यायसँ उद्धरित करल गेल अछि। बाललीलाधारी भगवान् श्रीकृष्ण जखन हथभर गोड़गर भऽ जाइत छथि तऽ बाल सुलभ प्रवृत्तिक बेर-बेर पुनरावृत्ति करैत छथि। चुन के दही बाड़ी खाइत छथि तऽ आगि छुबैत छथि, साँप पकरैत छथि, आगल सँ बहरइत छथि। एहि सँ तंग भऽ माता यशोदा डोरि मे हरि के बाँधि उखाड़ि सँ बाँधि दैत छथि।

उपर्युक्त प्रसंगक परिदृश्य मे कौतुक कला निपुण बाललीलाधारी ओहि उखरि के गुड़कओने-2 शापग्रस्त जमला-अर्जुन दुनू गाछक बीच फसा दैत छथि। स्पर्श संगहि दुनू विशालकाय गाछ अड़रा कऽ खसि पड़ल। सब सौर भेल। शापित जमला-अर्जुन मुक्त भऽ यथास्थान गेल आ एमहर नन्द-यशोमति संग ग्वाल-गोपाल, गोपी विकल विह्वल भऽ दौड़ि रहल अछि। संदेह सँ यशोदा कान्हा के ओहिना ताकि रहल अछि जे कि कोनो गायक अपन नेरु हेरयला पर होइत अछि। नन्द गोपाल छोड़ि ओहि ठामे दिस दौड़ि रहलाह अछि। सबहक दृष्टि जखन ओहि दुनू वृक्ष पर पड़ल आ शाखा बीच कृष्ण के प्रसन्न चित्त मोहिनी रूप के देखैत अछि तऽ अचंभित रहि जाइत अछि। बिनु बसते वा आन कोनो कारण नहि दृष्टिगत होइत अछि मुदा गाछ खसल अछि। माता यशोदा दौड़ि कऽ कृष्ण भगवान के अपना हृदय सँ लगा लैत अछि।

उपर्युक्त कार्य कौतुकक उत्सव मनाओल जाइत अछि। ओहि दिनसँ हरिक हजार नामक संख्या मे 'दामोदर' नामक पदवी प्राप्त करैत छथि। जनकल्याणक भाव स्पष्ट होइत अछि।

एहि प्रसंग सँ ई स्पष्ट होइत अछि जे लीलाधारी भगवान कृष्णक अवतार जनकल्याणकारी अछि। भक्त वत्सल प्रभु पद पंकजक स्पर्श श्रापोद्धारक सिद्ध होइत अछि। असम्भव काज हरिकृपा सँ सहज सम्भव भऽ जाइत अछि। समस्त प्राणिक लेल कृष्ण द्वारा कएल गेल कौतूहल काज भक्ति भावक प्रेरणा दऽ जाइत अछि। भाव जाग्रित होइत अछि—

"अच्युतं केशवं कृष्ण दामोदरम् ।"

~~[illegible]~~

अभ्यास प्रश्न — सप्रसंग व्याख्या करू ।

1. "रूप चतुर्भुज छिअ हरि छाड़ी
    नारद देत गए उकटी लाड़ी
  दीनक बन्धु अनाथक नाथ
    मानल कहल रहल दुइ हाथ
  जाहि बेरि जन्म महाप्रभु लेल
    तखन अन्धार रहल गोट भेल ।"
                                    — द्वितीय अध्याय

2. "मानुषभाव तखन देल छाड़ी
    लेलन्हि गोवर्द्धन अचल उपाड़ी
  गिरिधर छत्र जखन हरि धएल
    गोकुल सकल निराकुल कएल ।"
                                    — पंचम अध्याय

मिथिलाक्षर अभ्यास — [illegible]

— [illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible] ॥"

— पुन: पुन: पुनरावृत्ति करू। लेखन लेल मिथिलाक्षर अभ्यास पोथीक अध्ययन करू। मिथिलाक्षर लेखन विभिन्नता रहैत अछि।

इति शुभम् ।